Notes

## (2) मीड का सिद्धान्त :-

मीड ने समाजीकरण सम्बन्धी अपने विचार 'Mind, Self and Society' नामक अपनी कृति में प्रकट किये हैं। मीड यह मानते हैं कि व्यक्ति ही समाज का निर्माता है जिसमें दिमाग और 'स्व' होता है। स्व सामाजिक रूप से एक सामाजिक संरचना है और यह सामाजिक अनुभवों के कारण ही पैदा होता है। स्व के जन्म के बाद ही व्यक्ति सामाजिक अनुभव करता है। मीड ने उस प्रक्रिया का भी उल्लेख किया है जिसके द्वारा स्व का विकास होता है।

और व्यक्ति तब दूसरों के विचारों को ग्रहण करता है। जन्म के समय बच्चा एक जैविक जीवीय व्यक्ति होता है जिसमें बुद्धि का अभाव होता है। अतः वह आन्तरिक प्रेरणाओं से प्रेरित होकर ही क्रियाएं करता है। धीरे-धीरे परिवार एवं अन्य समूहों के सम्पर्क के कारण बच्चे को यह समझ पैदा होने लगती है कि उसके लोग किस प्रकार के व्यवहार की अपेक्षा करते हैं और उसके व्यवहारों का क्या अर्थ लगाया जाता है। इस प्रकार बच्चे का 'स्व' व्यवहार से प्रभावित होने लगता है। इसे ही वह 'सामान्यकृत अन्य' कहता है।

सामान्यकृत अन्य का अर्थ है - किसी व्यक्ति की स्वयं के बारे में वह धारणा जो दूसरे लोग उसके बारे में रखते हैं। अन्य शब्दों में, दूसरे व्यक्ति उसके बारे में जो निर्णय लेते हैं और उससे जो अपेक्षाएं करते हैं और उसका वह आन्तरीकरण करता है, उसे ही 'सामान्यकृत अन्य' कहते हैं।

व्यक्ति में आत्म-चेतना का विकास किस प्रकार से होता है, इसे स्पष्ट करने के लिए मीड ने 'मैं' (I) तथा 'मुझे' (Me) शब्दों का प्रयोग किया है। इसीलिए इस सिद्धान्त को 'मैं' और 'मुझे' का सिद्धान्त भी कहते हैं। 'मैं' का अर्थ व्यक्ति द्वारा दूसरों के प्रति किये जाने वाले व्यवहार से है, तथा 'मुझे' का अर्थ है व्यक्ति द्वारा किये गये व्यवहार पर दूसरों की प्रतिक्रिया जिसे व्यक्ति आन्तरीकृत करता है। 'मैं' और 'मुझे' में अन्तःक्रिया के कारण ही 'स्व' का विकास होता है। प्रारम्भ में ये दोनों धारणाएं एक-दूसरे से अलग होती हैं, किन्तु परिवार एवं समाज के सम्पर्क के कारण उनमें समानता स्थापित होने लगती है और वे एक ही चीज के दो पहलू हो जाते हैं।

अनुकरण, संकेत एवं भाषा के माध्यम से बच्चा दूसरों के व्यवहारों को ग्रहण करता है और उसमें विभिन्न प्रकार की भूमिकाएं निभाने की क्षमताएं पैदा हो जाती हैं। इसी स्थिति को मीड 'आत्म का विकास'

कहते हुए मीड के इस सिद्धान्त को संक्षेप में इस प्रकार प्रकट कर सकते हैं—

(i) समाजीकरण का अर्थ व्यक्ति के 'आत्म' के समुचित विकास से है.

(ii) 'आत्म' का विकास दूसरे लोगों के सामान्यकृत व्यवहार को अपने व्यवहार में समावेश करने से होता है।

(iii) 'आत्म' के विकास के बाद व्यक्ति जैविकीय प्राणी से 'सामाजिक स्व' से आत्म चेतन के रूप में बदल जाता है.

(iv) व्यक्ति का समाजीकरण उसी मात्रा में होता है जिस मात्रा में उसके सामाजिक व्यवहार, उसके जैविकीय एवं संवेगात्मक व्यक्तित्व के प्रभाव को कम कर दें।

(v) स्वयं में तथा अन्य व्यक्तियों में भेद करने की चेतना पैदा होना ही आत्म का विकास है और इसी आधार पर वह दूसरों के प्रति अपने व्यवहार को निश्चित करता हुए तरह-तरह के आदतें सीखता है अर्थात अपना समाजीकरण करता है।

## (3) फ्रायड का सिद्धान्त:—

फ्रायड नामक मनोवैज्ञानिक ने समाजीकरण के अपने सिद्धान्त को मानसिक क्रियाओं के आधार पर समझाया हुए वे यह मानते हैं कि मानव का समस्त व्यवहार लिबिडो अर्थात काम-प्रवृत्तियों से तय होता है फ्रायड ने समाजीकृत आत्म की समाजशास्त्रियों की अवधारणा को चुनौती दी और कहा कि 'स्व' एवं समाज में कोई ताल-मेल नहीं होता हुए वह यह मानते हैं कि मानव व्यवहार का तार्किक पक्ष उसी प्रकार है जिस प्रकार किसी समुद्र में हिमखण्ड का बाहरी भाग होता है, जिस प्रकार हिमखण्ड का अधिकांश भाग पानी में रहता है उसी प्रकार मानव व्यवहार का अधिकांश भाग भी अनदेखा व अचेतन शक्तियों द्वारा संचालित होता है।

फ्रायड ने 'स्व' को 'इड' (Id), 'अहम' (Ego) और पराअहम (Super ego) इन तीनो भागों मे बाटा। इड (Id) अहम की मूल-प्रवृत्तियों, प्रेरणाओं, असमाजीकृत इच्छाओं एवं स्वार्थों का योग है। इड के सामने नैतिक-अनैतिक, अच्छे-बुरे का कोई प्रश्न नहीं होता है। यह पाशविक प्रवृत्ति के निकट है जो किसी न किसी प्रकार सन्तुष्टि चाहता है। 'अहम' स्व का चेतन एवं तार्किक पक्ष है जो व्यक्ति को सामाजिक परिस्थितियों के अनुकूल व्यवहार करने का निर्देश देता है और इड पर नियन्त्रण रखता है। 'अहम' भी 'इड' के समान नैतिक-अनैतिक, प्रेम व घृणा को अधिक महत्व तो नहीं देता फिर भी यह अधिक व्यावहारिक है क्योंकि यह 'इड' को परिस्थितियों के अनुकूल होने पर ही अपनी इच्छा की पूर्ति की स्वीकृति देता है।

'पराअहम' (Super ego) सामाजिक मूल्यों एवं आदर्शों का संयोग है जिसे व्यक्ति ने आत्मसात कर रखा है और जो उसकी अन्तरात्मा का निर्माण करते है।

एक उदाहरण द्वारा हम फ्रायड की इड, अहम एवं पराअहम की अवधारणा को स्पष्ट करेंगे। मान लीजिए कि एक व्यक्ति बहुत भूखा है और उसे मिठाई खाने की इच्छा है। यह भूख इड कहलाती है। 'अहम' कहेगा कि यदि मिठाई खानी है और भूख शान्त करनी है तो मेहनत करो, पैसा कमाओ या अगर परिस्थिति अनुकूल हो तो चोरी कर लो, चुपके से उठा कर खा लो। इस प्रकार 'अहम' व 'इड' सामाजिक परिस्थितियों में सामंजस्य स्थापित करने का प्रयत्न करते हैं, किन्तु 'पराअहम' व्यक्ति को कहेगा चोरी करना पाप है, अनैतिक है, सामाजिक मूल्यों के विपरीत है अतः ऐसा मत करो। इस प्रकार 'पराअहम' विवेक और सामाजिक मूल्यों को प्रकट करता है। यह व्यक्ति के समाजीकरण का प्रमुख आधार है।

**पराअहम इड तथा 'अहम' दोनों पर नियंत्रण रखता**
है और उन्हें समाज के मूल्यों के अनुरूप आचरण करने का निर्देश
देता है। फ्रायड का मत है कि इड और पराअहम में सदैव संघर्ष
पाया जाता है, क्योंकि समाज यौन इच्छाओं और आक्रामक भावनाओं
पर प्रतिबन्ध लगाता है। सामान्यतः इड उस संघर्ष में हार जाता
है, किन्तु कभी-कभी वह पराअहम की अवहेलना भी कर देता है
और व्यक्ति समाज-विरोधी कार्य कर बैठता है। इस प्रकार
फ्रायड न तो और समाज को एक दूसरे के पूरक न मानकर
परस्पर विरोधी मानता है। फ्रायड के अनुसार 'इड' व पर-
अहम' के पारस्परिक संघर्ष की प्रक्रिया से ही व्यक्ति का
समाजीकरण होता है। बचपन में व्यक्ति जब सामाजिक
व्यवहार से परिचित नहीं होता है तो 'इड' से प्रभावित
होकर व्यवहार करता है। दूसरे लोगों के सम्पर्क में आने पर
उसे इस बात का ज्ञान होता है कि अपनी आवश्यकता किस
प्रकार पूरी की जानी चाहिए। यही अहम के विकास की
स्थिति है। अन्य व्यक्ति के सम्पर्क से ही वह सामाजिक
मूल्यों एवं आदर्शों से परिचित होता है, वह यह जानने
लगता है कि समाज किस प्रकार के व्यवहार को स्वीकार
व अस्वीकार करता है, नैतिक व अनैतिक समझता है।
वह इड और अहम की बात को दुकरा कर जितना
पराअहम के अनुसार आचरण करता है, उतना ही उसका
समाजीकरण सफल माना जाता है।

Notes

27 Sunday

फ्रायड ने मानव व्यक्तित्व को 'इड, अहम
और 'पराअहम' में जिस प्रकार विभाजित किया है, उसे
हम आनुभविक प्रयोग के आधार पर सिद्ध नहीं कर
सकते। अतः यह सत्यता से परे एवं काल्पनिक अधिक
लगता है। फिर भी समाज वैज्ञानिक फ्रायड की इस
बात को स्वीकार करते हैं कि मानव की प्रेरणाएं
अचेतन और मानव के तार्किक नियन्त्रण से बाहर होती हैं
तथा सदैव ही व्यक्तियों समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप नहीं होती
फ्रायड समाजीकरण में मानसिक तत्वों पर अधिक जोर देकर अतिवादी हो
गये हैं।